(छहढाला प्रवचन, पृष्ठ : 23 का शेष...)

और तो कुछ निजस्वरूप उसको दिखता नहीं हैं; अत: बार-बार ऐसी अनन्त पीड़ा को भोगता हुआ यह जीव अनंतकाल से कुमरण करता आया है। अन्य जीवों ने जैसे अनन्तबार दुःख भोगे हैं, वैसे तुम भी अनंतबार अज्ञानता के कारण ऐसे दुःख भोग चुके हो; अतः उससे बचने के लिए सच्चा ज्ञान करो।

ज्ञानी के तो आनंद की लहर प्रतिक्षण बहती रहती है; क्योंकि उसने आत्मा को देह से भिन्न जान लिया है। देह को ही निजस्वरूप माननेवाले अज्ञानी को मृत्यु का डर है कि देह चली जायेगी तो मैं मर जाऊँगा। इसप्रकार जगत को मरण का भय है; किन्तु ज्ञानी को नहीं। जहाँ सुख का समुद्र अपने में ही उमड़ता हुआ देखा, वहाँ दुःख कैसा और कुमरण भी कैसा ? और जहाँ देह से भिन्न चैतन्य का भेदज्ञान नहीं है, वहाँ पर दुःख और कुमरण ही है।

वीतराग-विज्ञानरूप भेदज्ञान के बिना समाधिमरण या सुख हो ही नहीं सकता। जीव ने स्वयं अज्ञान से कैसे भयानक दुःख सहन किये है, उसको यदि यह जाने और स्वभाव के परमसुख को भी जाने तो अवश्य ही दुःख के कारणों को छोड़कर सुख का उपाय करे; तब फिर उसे नरकादि के दुःख कैसे रहेंगे ? वह तो सादि-अनंतकाल तक सुखधाम में ही विराजित हो जायेगा।

अरे जीव ! जब तुम्हें दुःख भाता नहीं है तो उस दुःख के कारणरूप मिथ्यात्वादि भाव को तुम क्यों नहीं छोड़ते ? तथा सुख तुम्हें प्रिय है तो उस सुख के कारणरूप सम्यक्त्वादि भाव को तुम क्यों नहीं सेते? दुःख तो किसी को भी प्रिय नहीं लगते? अत: जीव जबतक दुःख के कारण का सेवन न छोड़े, तबतक उसका दुःख मिटता नहीं है। स्वयं अपने में आनन्द का समुद्र भरा पड़ा है; किन्तु जीव अपनी ओर देखता नहीं, इससे उसको अपना आनन्द अनुभव में नहीं आता और बाह्यदृष्टि से वह दुःखी हो रहा है। यहाँ इस जीव ने एकेन्द्रिय पर्याय से लेकर पंचेन्द्रिय तक की तिर्यंच पर्यायों में कैसे-कैसे दुःख भोगे वह बताया है। अब, आगे नरकगति के दुःखों का कथन करेंगे। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 290 अंक : 2

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद

(मनहरण कवित्त)

अब इस शास्त्र के मुकुटमणि के समान।
पाँच सूत्र निरमल पंचरत्न गाये हैं।।
जो जिनदेव अरहंत भगवन्त के।
अद्वितीय शासन को सर्वत: प्रकाशे हैं ।।
अद्‌भुत पंचरत्न भिन्न-भिन्न पंथवाली ।
भव-अपवर्ग की व्यतिरेकी दशा को ।।
तप्त संतप्त इस जगत के सामने।
प्रगटित करते हुये जयवंत वर्तो ।।१८।।

(दोहा)

स्याद्वादमय नयप्रमाण से दिखें न कुछ भी अन्य।
अनंत धर्ममय आत्म में दिखे एक चैतन्य ।।१९।।

(हरिगीत)

आनन्द अमृतपूर से भरपूर जो बहती हुई।
अरे केवलज्ञान रूपी नदी में डूबा हुआ ।।
जो इष्ट है स्पष्ट है उल्लसित है निज आत्मा।
स्याद चिन्हित जिनेन्द्र शासन से उसे पहिचान लो।। २०।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इष्टोपदेश प्रवचन

निज आत्मा ही आनन्दकारी

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 43 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

यो यत्र निवसन्नास्ते स तत्र कुरुते रतिं ।
यो यत्र रमते तस्मादन्यत्र स न गच्छति ।।43।।

जो जहाँ निवास करता है, वह वहाँ रति करता है और जो जहाँ रमता है, वह वहाँ से अन्यत्र नहीं जाता। उसे वहीं अच्छा लगने लगता है। उसका मन भी वहीं लगने लगता है; फिर वह जीव उससे दूर नहीं होता।

(गतांक से आगे ..)

धर्मी जीव को संसार के विषयों में आकुलता और आत्मा में निराकुलता भासित होती है। विषय-भोग पराधीन और आत्मिक आनंद स्वाधीन लगता है। वस्तुत: इन्द्रिय विषयसुख बंध का कारण है और आत्मा के अतीन्द्रिय सुखानुभव से बंध का अभाव होता है; अत: धर्मी अपनी स्वाधीन, अनाकुल, आनंदस्वरूप पेढ़ी को छोड़कर अन्य विषयों में लीन नहीं होता है।

अज्ञानी जीव को तुच्छ विषय में भी प्रीति हो तो वह विषय उससे छूटता नहीं है तथा ज्ञानी को तो निराकुल, स्वाधीन, अतीन्द्रिय आनन्द का प्रेम लगा है, वह उससे कैसे छूटें ? अतीन्द्रिय आनन्द के वेदन से धर्मी को कर्मों की भी विशेष निर्जरा होती है, फिर वह निज आत्मा के वेदन को कैसे छोड़ सकता है ? अर्थात् नहीं छोड़ सकता।

त्रिकाल एकरूप निज ध्रुव, शुद्ध आत्मस्वभाव की दृष्टि किये बगैर सम्यग्दर्शन नहीं हो सकता; किन्तु अभेद स्वभाव की दृष्टि करते ही सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव को ही भावश्रुतज्ञान/प्रमाणज्ञान प्रगट होता है। निश्चय और व्यवहार दोनों नय प्रमाण के अवयव हैं और प्रमाणज्ञान अवयवी है; इसलिए व्यवहारपूर्वक निश्चय होता है ह्न ऐसा मानना या कहना झूठ है।

जैनदर्शन का त्रिकाल एक महासिद्धांत है कि भूतार्थ स्वभाव के आश्रय से ही सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। प्रथमत: निश्चय और उसके बाद व्यवहार होता है। व्यवहार प्रथम हो और बाद में निश्चय ह्न ऐसा त्रिकाल नहीं हो सकता। वस्तु का स्वरूप सदैव एक सा ही रहता है।

जिसप्रकार शरीर के बिना हाथ-पैर नहीं हो सकते; उसीप्रकार प्रमाणज्ञानरूप अवयवी के बिना निश्चय-व्यवहाररूप अवयव भी नहीं हो सकते तथा प्रमाणज्ञान स्वभाव-दृष्टिपूर्वक सम्यग्दर्शन के साथ प्रगट होता है।

समयसार की 11 वीं गाथा में **भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो** कहकर तीनलोक और तीनकाल में कभी न बदलनेवाला जैनदर्शन का अटूट सिद्धान्त कहा है। निश्चय से निमित्त, राग और गुण-गुणी के समस्त भेदों से दृष्टि हटाकर अभेद भूतार्थ स्वभाव की दृष्टि करते ही सम्यग्दर्शन प्रगट होता है और सम्यग्दर्शन के साथ सम्यग्ज्ञान प्रगट होता है।

सामान्य को जाननेवाले नय को निश्चय कहते है और विशेष को जाननेवाले नय को व्यवहार तथा एकसाथ दोनों को जाने उसे प्रमाणज्ञान कहते है।

मुख्य वह निश्चय है और गौण वह व्यवहार है। सामान्य स्वभाव मुख्य है और उसकी दृष्टि करनेपर सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रगट होता है और उससमय ये दोनों ही नय वहाँ उपस्थित होते है।

जिसे आत्मा का विश्वास प्रगट हो जाए उसे आत्मा के अतिरिक्त और किसी में आनन्द भासित नहीं होता। अपने निराकुल स्वभाव के आगे उसे समस्त विषय आकुलतारूप लगते है। स्वाधीन स्वभाव के समक्ष अन्य सब कुछ पराधीन लगता है; अत: स्वाश्रय से निर्जरा और पराश्रय से बंध होता है ह्न ऐसा जानकर ज्ञानी स्वभाव को छोड़कर अन्य विषयों में नहीं अटकते है।

अतीन्द्रिय आनन्दानुभव की जिसे पुष्टि हो गई है, प्रतिक्षण निज आत्मा के आनन्द का ही जिसे वेदन हो रहा हो, वह निजात्मा का आनन्द छोड़कर बाह्य पदार्थों का आनन्द लेने क्यों जायेगा ? **(शेष पृष्ठ : 28 पर ..)**

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 19 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया।
पज्जयणएण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं ।।

द्रव्यार्थिकनय से जीव पूर्वकथित पर्याय से व्यतिरिक्त हैं; पर्यायार्थिकनय से जीव उस पर्याय से संयुक्त हैं। इसप्रकार जीव दोनों नयों से संयुक्त हैं।

(गतांक से आगे)

अब इस जीवाधिकार की अन्तिम १९ वीं गाथा पूर्ण करते हुये टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव आगामी श्लोक कहते हैं।

(मालिनी)

अथ नययुगयुक्तिं लंघयन्तो न संत:
परमजिनपदाब्जद्वन्द्वमत्तद्विरेफा: ।।
सपदि समयसारं ते ध्रुवं प्राप्नुवन्ति
क्षितिषु परमतोक्ते: किं फलं सज्जनानाम् ।।36।।

जो दो नयों के सम्बन्ध का उल्लंघन न करते हुये परम जिन के पाद पंकज युगल में मत्त हुये भ्रमर समान हैं ह्न ऐसे सत्पुरुष समयसार को शीघ्र ही प्राप्त करते हैं। पृथ्वी पर परमत के कथन से सज्जनों को क्या फल है ? (अर्थात् जगत में जैनेतर दर्शनों के मिथ्याकथनों से सज्जनों को क्या लाभ है।)

विभाव व्यंजन पर्याय की जो बात कही थी, वह बात सर्वज्ञ के मार्ग के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं है ही नहीं। आत्मा के असंख्य प्रदेश और उनकी विभाव आकृति ह्न ऐसी बात वीतराग शासन के अलावा दूसरी जगह नहीं हो सकती; अत: टीकाकार कहते हैं कि अहो ! सर्वज्ञ के शासन में सर्व पूर्णता है तो फिर पृथ्वी पर

दूसरे (परमत) के कथन से सज्जनों को क्या लाभ है।

एक-एक समय की विभाव पर्याय भी स्वतंत्र है, किन्तु उस स्वंतत्र पर्याय को कोई पराधीन माने तो वह आत्मा की स्वाधीनता का लुटेरा है। शरीर के कारण आत्मा का वैसा आकार हो जाता है ह्न ऐसा नहीं है; किन्तु आत्मा की अपनी विभाव व्यंजन पर्याय की ऐसी ही योग्यता है। अपनी पर्याय पर के कारण माने तो उसके पर्यायार्थिक नय भी नहीं रहता।

वीतराग के अनुयायी दो नयों के संबंध को तोडते नहीं है अर्थात् व्यवहार को व्यवहाररूप से जानते हैं और निश्चय को निश्चयरूप से जानते हैं। व्यवहार से निश्चय होता है ह्न यदि ऐसा माने तो उसने दोनों ही नयों को नहीं माना है। जिनमत का अनुयायी दोनों ही नयों को उल्लंघता नहीं है। वह जिनेन्द्र देव के चरण कमल में मत्त हुये भ्रमर के समान है। वीतराग देव की वाणी का पराग चूसने में जो लीन है ह्न ऐसा सत्पुरुष शीघ्र शुद्धात्मा को प्राप्त होता है और जो वीतराग मार्ग का उल्लंघन करता है, वह संसार का उल्लंघन कभी नहीं कर सकता है।

जिनेन्द्र कथित दो नयों को जानकर सत्पुरुष शीघ्र ही शुद्धात्मा को अवश्य प्राप्त करते हैं। तब फिर ऐसे सर्वज्ञदेव के शासन के अलावा पृथ्वी पर अन्य मिथ्यामतों के कथनों से सज्जनों को क्या लाभ है अर्थात् कुछ भी लाभ नहीं है।

जगत में अनेक अभिप्राय चलते हैं, वे किसी के द्वारा टाले नहीं जा सकते। स्वयं ही उनसे उदास होकर अपने स्वरूप की संभाल करे तो शुद्धात्मा को पा जावे। वीतराग के द्वारा कहा हुआ दो नयों का कथन जगत में अन्यत्र कहीं है ही नहीं। इसलिये दूसरे किसी के साथ जैन शासन का सुमेल किंचित् भी बन जाये ऐसा नहीं है।

इसप्रकार सुकविजनरूपी कमलों के लिये जो सूर्य के समान हैं और पाँच इन्द्रियों के फैलावरहित देहमात्र ही जिनको परिग्रह था ऐसे निर्ग्रन्थ मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारि देव द्वारा रचित नियमसार की तात्पर्यवृत्ति नामक टीका में (अर्थात् श्रीमद्भगवत् कुन्दकुन्दाचार्य देव प्रणीत श्री नियमसार परमागम की श्री पद्मप्रभमल धारिदेवविरचित) जीवाधिकार नामक प्रथम श्रुतस्कंध अधिकार समाप्त हुआ। ●

अब अजीवाधिकार की प्रथम गाथा कहते हैं ह्न

अणुखंधवियप्पेण दु पोग्गलदव्वं हवेइ दुवियप्पं।
खंधा हु छप्पयारा परमाणू चेव दुवियप्पो ।।20।।

परमाणु और स्कंध ह्न ऐसे दो भेद से पुद्गल द्रव्य दो प्रकार का है। स्कंध वास्तव में छह प्रकार का है और परमाणु के दो भेद हैं।

इस लोक में पाँच अजीव द्रव्य हैं। उन्हें जाननेवाला आत्मा है; किन्तु अजीव तत्त्व की और निज तत्त्व की इस जीव को अभी तक खबर नहीं है। जीव तत्त्व का ज्ञान हुये बिना अजीव तत्त्वों का भी यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता है; अत: सर्वप्रथम ज्ञानस्वभावी आत्मा का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

अजीव पदार्थ की सत्ता है, उसमें प्रमेयत्व नामक गुण है, इसलिये वह जाना जावे ह्न ऐसा नहीं है। जीव का स्वयं स्व-परप्रकाशक स्वभाव है, इसलिये स्व का ज्ञान होने पर परपदार्थ भी सहज जानने में आते हैं। ज्ञान पर के कारण से जाने तो उसका जानने का स्वभाव ही न रहे; किन्तु ज्ञान ज्ञान से जानता है ह्न ऐसा उसका स्वसंवेदनरूप स्वभाव है। ज्ञान का यह सहज और स्वतंत्र स्वभाव है कि वह स्व और पर दोनों को अपने आप ही जानता है।

परमाणु अतीन्द्रिय है। अतीन्द्रिय आत्मा का ज्ञान हुये बिना परमाणु का ज्ञान नहीं हो सकता और परमाणु का ज्ञान हुये बिना स्कंध का भी सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता; तथापि अतीन्द्रिय आत्मा को जानने पर अतीन्द्रिय परमाणु का ज्ञान होता है ह्न ऐसा कहना व्यवहार है। सर्वज्ञ देव तो परमाणु में तन्मय हुये बिना ही परमाणु को जानते हैं।

जगत के जीव कहते हैं कि हमने स्कंध को अच्छी तरह से जाना है; किन्तु अज्ञानी जीवों को अभी सच्चे/झूठे की पहिचान ही नहीं है। मूल वस्तुरूप परमाणु तो अतीन्द्रिय है, उसे जाने बिना स्कंध का भी यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। किसी स्कंध के होने में जब कोई दूसरा स्कंध ही कारण नहीं है तो फिर आत्मा स्कंध का कारण कैसे हो सकता है ? अर्थात् नहीं हो सकता। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दुःख की कथा

वध बंधन आदिक दुःख घने, कोटि जीभ तें जात न भने।
अति संक्लेश भाव तें मर्यो, घोर श्वभ्रसागर में पर्यो।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

प्रश्न :ह्न जीव ने जो अनन्त दुःख सहन किये है, वे इसे याद क्यों नहीं आते ?

उत्तर :ह्न अरे भाई ! वर्तमान में जो दुःख हो रहा है, वह तो नजरों से दिख रहा है न ! वैसे ही भूतकाल में भी अज्ञानपूर्वक जीव ने अनन्त दुःख उठाये हैं। जीव की स्वयं की मूढ़ता के कारण वे दुःख याद न आये तो इससे क्या ? माता के उदर में उल्टे मस्तक नव मास तक रहकर जो दुःख भोगा है, उसकी भी याद नहीं आती है तो क्या वह दुःख नहीं था ? अरे भाई ! सन्त तुझे याद दिलाते हैं कि अज्ञान के कारण अबतक का अनन्तकाल तूने कैसे दुःख में व्यतीत किया है। चारगति में कहीं पर भी रंचमात्र सुख तुझे प्राप्त नहीं हुआ है। अरे ! तेरी दुःखकथा इतनी करुणाभरी और मार्मिक है कि उसे सुनते ही वैराग्य आ जाये।

जिनवाणी में सुकौशल मुनिराज के वैराग्य प्रसंग का वर्णन आता है। सुकौशल की माता यशोभद्रा से किसी ज्योतिषी ने कह रखा था कि तेरा यह पुत्र किसी भी दिगम्बर मुनिराज को देखते अथवा उनके वचन सुनते ही वैरागी होकर दीक्षा धारण कर लेगा। इस कारण उसकी माता सदैव चिन्तित रहती थी। वह सुकौशल को महल में ही रखती थी; क्योंकि उसे भय था कि कहीं कोई दिगम्बर मुनि उसके पुत्र के देखने में आ जाये तो वह दीक्षा ले लेगा, इसकारण वह अपने पुत्र को महल से बाहर नहीं जाने देती थी। सुकौशल के लिए सारी सुख-सुविधाएँ महल में ही उपलब्ध थी। उसी यशोभद्रा का भाई अर्थात् सुकौशल का मामा यशोभद्र मुनि हुआ था; उसने अवधिज्ञान से जाना कि सुकौशल की आयु अब थोड़े ही दिनों की बाकी है; अत: अपने भानजे को संबोधन करने के उद्देश्य से उसी महल के पीछे स्थित

उद्यान में वह ' त्रिलोकप्रज्ञप्ति' नामक शास्त्र का स्वाध्याय करने लगे; उसमें तीन लोक का वर्णन था।

सर्वप्रथम अधोलोक के वर्णन में प्रथम नरक के दुःखों का वर्णन आया। अपने महल में बैठे-बैठे वह सुकौशल उसे सुन रहा था; सुनते ही इसके हृदय में वैराग्यभावना उमड़ आई। अधोलोक के वर्णन के पश्चात् मध्यलोक और फिर ऊर्ध्वलोक के अच्युतस्वर्ग का तथा वहाँ के देवों की विभूति आदि का वर्णन सुनकर सुकुमार को अपने पूर्वभव का स्मरण हो आया और इन्द्रिय-सुखों को असार जानकर संसार से उसका मन विरक्त हो गया। वह तत्काल ही महल से उतरकर यशोभद्र मुनिराज के पास चला गया और मुनिराज के मुख से 'अब तुम्हारी आयु मात्र तीन दिन ही शेष है' ह्न यह वचन सुनते ही उसी वक्त वैराग्यपूर्वक दीक्षा लेकर मुनि हो गया। इस प्रकार नरकादि के दुःखों के स्वरूप का विचार करने पर भी संसार से वैराग्य आ जाये ह्न ऐसा होता है।

पूर्व का अनन्तकाल जीव ने दुःख में ही बिताया है। मोक्षसुख उसने कभी नहीं पाया। मोक्षसुख यदि एकबार भी पा ले तो फिर संसार में अवतार ही नहीं होता। धर्म के आराधक जीवों को किंचित् राग के कारण कदाचित् संसार में एक-दो भव धारण करना पड़े तो वह हो जाए; किन्तु हलके श्रेणी के अवतार उसको नहीं होते। तिर्यंच-नरक जैसे हलके अवतार का आयुष्य मिथ्यादृष्टि ही बाँधता है, सम्यग्दृष्टि नहीं बाँधता। किसी राजकुमार को जीते जी लोहे के रस बनाने वाली भट्टी में फेंकने पर उसे जो दुःख हो ह्न ऐसा महा भयंकर दुःख अज्ञान के वश होकर अनन्तबार इस जीव ने तिर्यंचगति में भोगा है। वहाँ उसने स्वयं क्रूर पापी होकर दूसरों को मारा इसलिये वह नरक में गया अथवा दूसरों ने क्रूरतापूर्वक उसको मारा तब तीव्र क्रोधादि संक्लेश परिणामों से मरकर वह नरक में गया।

नरक यानी दुःख का समुद्र। उसके दुःख का क्या कहना ? एक जगह घातकी लोग भेड़ के बच्चे के शरीर को धधकते लोहे की तीली से पिरोकर आग में सेंकते थे। कितनी क्रूरता ! उस भेड़ को भी कितनी पीड़ा होती होगी। देह से अतिरिक्त

(शेष पृष्ठ : 4 पर....)

30 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संस्थापित श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 5 से 14 अगस्त, 2007 तक 30 वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 5 अगस्त, 2007 को डॉ. बाबूभाई दोशी कडियादरा के करकमलों से हुआ। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री शैतानमलजी कीयावत, मन्दसौर ने की।

सभा को संबोधित करते हुये विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने कहा कि हम दिगम्बर जैन समाज के ही अभिन्न अंग हैं, हमारी कोई भी चेष्टा ऐसी न हो जो संगठन के नाम पर विघटन का कारण बने। हमारे इस महाविद्यालय में बिना किसी भेदभाव के सम्पूर्ण जैन समाज के बालकों को प्रवेश दिया जाता है, जिनमें मुमुक्षुओं के बालक 25 प्रतिशत ही होंगे। यही अनुपात शिविरों में आनेवाले भाईयों का भी है तथा दशलक्षण में विद्वानों को प्रवचनार्थ बुलानेवालों का भी है। सम्पूर्ण जैनसमाज की एकता की दृष्टि से यह सुखद स्थिति है। इसे कायम रखा जाना चाहिये।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन कोटा ने किया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमार सुनीलकुमारजी सर्राफ परिवार, सागर थे। इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री अजितकुमारजी तोतूका जयपुर एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई ने किया।

मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई दोशी एवं श्री अमृतभाई मेहता ने तिलक लगाकर, माल्यार्पण से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं मंगलाचरण कु. परिणति पाटील जयपुर ने किया ।

शिविर में प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप व सी. डी. प्रवचन के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के प्रात: समयसार की चौथी से सातवीं गाथाओं पर एवं प्रसिद्ध विद्वान डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के प्रात: समयसार की 19 वीं गाथा पर तथा रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रथम प्रवचन में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, डॉ. महेशजी जैन भोपाल, डॉ. विमलजी शास्त्री जयपुर, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा निमित्तोपादान, ब्र.यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान

विवेचन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्धयुपाय, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे द्वारा छहढाला, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा नैगमादि सप्त नय, पण्डित मनीषजी शास्त्री द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा द्वारा गोम्मटसार की कक्षाओं का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यानमाला में पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित रमेशचन्दजी जैन जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोडी, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित शैलेषभाई तलोद के व्याख्यान हुये।

प्रात: की प्रौढकक्षा में पण्डित रूपचन्दजी बण्डा, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित जवाहरलालजी विदिशा आदि का लाभ मिला।

दिनांक 12 अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन श्री शिखरचन्दजी जैन विदिशा ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी का मार्मिक उद्बोधन प्राप्त हुआ तथा डॉ. श्रेयांसजी जैन जयपुर, श्री ज्ञानचन्दजी जैन कोटा, श्री पुखराजजी पहाडिया पीसांगन, श्री शिखरचन्दजी जैन विदिशा, श्री प्रमोदजी जैन सागर, श्री मलूकचन्दजी जैन सागर, श्री अभयकुमारजी टडैया ललितपुर, श्री अनूपजी नजा ललितपुर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री बसन्तभाई दोशी ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना एवं पं. सुनीलजी भोपाल ने किया। संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक एवं आभार प्रदर्शन पं. शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

शिक्षण-शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व.हीराबेन छोटालाल मेहता की पुण्य स्मृति में हस्ते श्री प्रवीणचन्द्र मेहता सूरत, श्री जगदीशभाई सी. मोदी परिवार मुम्बई, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री नवीनचन्द्र केशवलाल मेहता मुम्बई, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी व सुपुत्र श्री अशोक पाटनी कोलकाता थे।

शिविर के अवसर पर श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान श्री बाबूलालजी सुखलालजी पंचोली थांदला, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाडा, श्री शिखरचन्दजी नीरजकुमारजी जैन आरोन, श्री प्रमोदजी जैन परिवार सागर, श्री गोपीलालजी बाबूलालजी जैन कुम्भराज-गुना, श्री केशवजी जैन कुरावली, श्री मूलचन्दजी छाबड़ा जयपुर, श्री मगनलालजी मामाजी आरोन ने कराया।

शिविर में साधर्मियों की आशातीत उपस्थिति रही। लगभग 1800 मुमुक्षु भाई-बहिनों ने 17 घण्टे प्रतिदिन चलनेवाली तत्त्वज्ञान की अविरलधारा से अपने जीवन को सफल किया।

सम्पूर्ण शिविर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, श्री अमृतभाई मेहता एवं श्री महीपालजी ज्ञायक के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। ●

दशलक्षण महापर्व में धर्मप्रभावनार्थ कौन-कहाँ ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 16 सितम्बर 2007 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग एक माह का समय शेष है, तथापि दिनांक 16 अगस्त 2007 तक हमारे पास 406 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं।

दिनांक 14 अगस्त 2007 तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 363 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 189 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही प्रभावनार्थ जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों मेंह्न 1.**कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, 2.**मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, 3.**जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, 4.**आलंद (कर्ना.) :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, 5.**मोडनिंब :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, 6.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, 7.**छिन्दवाड़ा :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 8.**दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, 9.**पीसांगन :** ब्र.अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना, 10.**मुम्बई(दादर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 11.**फिरोजाबाद :** ब्र. सुमतप्रकाशजीजैन खनियाँधाना, 12.**भिण्ड (देवनगर) :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, 13. **इन्दौर (शक्कर बाजार) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, 14.**उज्जैन :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल 15.**अशोकनगर :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, 16.**जबलपुर :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, 17. **भोपाल (चौक) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 18.**अजमेर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, 19.**मुजफ्फरनगर :** पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, 20.**सासनी :** पण्डित अशोककुमारजी लुहाडिया मंगलायतन, 21. **कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर।

विदेश मेंह्न 1.**नैरोबी :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, 2-3.**वाशिंग्टन(अमेरिका) :** पण्डित दिनेशभाई शाह मुम्बई एवं डॉ. उज्ज्वलाताई शाह मुम्बई, 4.**लंदन :** पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, 5.**शिकागो :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट।

मध्यप्रदेश प्रान्तह्न 1. **भिण्ड (परमागम)** : ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललितपुर, 2. **इन्दौर (साधनानगर)** : डॉ. दीपककुमारजी जैन जयपुर, 3. **इन्दौर (गांधीनगर)** : पण्डित विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, 4.**इन्दौर (रामचन्द्र नगर)** : पण्डित अनिलजी जैन इन्जि. भोपाल,

5. **इन्दौर (माणक चौक)** : पण्डित सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, 6.**इन्दौर (न्यू पलासिया)** : पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्रीकानपुर, 7. **इन्दौर (नन्दानगर)** : पण्डित लालारामजी साहू अशोकनगर, 8.**भोपाल (कोहेफिजा)** : पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, 9. **भोपाल (अशोका गंज)** : पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा, 10. **निसई** : पण्डित कपूरचन्दजी समैया सागर, 11. **विजयपुर** : पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर, 12.**बनखेडी :** पण्डित उमरेशकुमारजी सिंघई भोपाल, 13.**बडगाँव** : पण्डित सुरेशचन्दजी सर्राफ ललितपुर, 14. **भोपाल (पंचशील नगर)** : ब्र.सुधाबेनजी छिन्दवाड़ा, 15. **ग्वालियर (फालका बा.)** : पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर, 16.**ग्वालियर(ठाटीपुर)**:पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर, 17.**ग्वालियर(दानाओली)** : पण्डित विकासजी शास्त्री खनियांधाना, 18.**ग्वालियर(लश्कर)** : पण्डित अनुराजजी शास्त्री फिरोजाबाद, 19.**ग्वालियर(सोड़ा का कुआँ)** : ब्र. विमलाबेनजी जैन सागर, 20-21.**विदिशा (किला अन्दर)** : पण्डित अमितकुमारजी मोदी खनियांधाना एवं पण्डित एकत्वजी जैन खनियांधाना, 22.**विदिशा (स्टेशन)** : पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा रतलाम, 23. **रांझी (जबलपुर)** : पण्डित सत्येन्द्रजी जैन बीना, 24. **बीना** : श्रीमती पुष्पाजी जैन खण्डवा, 25. **सागर (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित अरंहतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 26.**सागर (मकरोनिया)** : पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना, 27. **रतलाम (चांदनी चौक)** : पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, 28. **रतलाम (स्टेशन)** : पण्डित विमलचन्दजी जैन लाखेरी, 29. **दुर्ग** : पण्डित पन्नालालजी खैरागढ, 30.**मन्दसौर(कालाखेत)** : पण्डित संजयजी शाह अरथूना, 31. **खनियांधाना** : पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, 32-33. **शहडोल** : पण्डित फूलचन्दजी मुक्कीरवार हिंगोली एवं श्रीमती मंजूषाजी मुक्कीरवार हिंगोली, 34. **गुना (मुमुक्षु म.)** : पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर, 35-36. **खुरई** : विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन एवं विदुषी पुष्पाजी झांझरी उज्जैन, 37. **बड़नगर** : पण्डित देवेन्द्रजी जैन सिंगोडी, 38. **शहपुरा भिटोनी** : पण्डित सुनीलजी जैन इन्जि. सागर, 39. **छिन्दवाड़ा** : विदुषी समताजी झांझरी उज्जैन, 40. **सिवनी** : पण्डित शांतिलालजी जैन महिदपुर, 41. **अम्बाह** : पण्डित शांतिलालजी काला भिण्ड, 42. **अकाझिरी** : पण्डित विनयजी पटवारी खनियांधाना, 43.**मौ** : पण्डित मिश्रीलालजी जैन खनियांधाना, 44.**आरोन** : पण्डित नितुलकुमारजी जैन भिण्ड, 45. **टीकमगढ़** : ब्र. कल्पनाबेनजी जैन जयपुर, 46. **कोलारस** : पण्डित सुरेशचन्दजी जैन इन्जि. भोपाल, 47. **छिन्दवाड़ा** : पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, 48.**बेगमगंज** : पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा, 49. **गौरझामर** : पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री शिवपुरी, 50. **नागदामण्डी** : पण्डित सरदारमलजी जैन बेरसिया, 51.**मंडला** : पण्डित अरूणजी लालोनी अशोकनगर, 52. **धामनोद :** पण्डित हुकमचन्दजी राघौगढ, 53. **रन्नौद** : पण्डित सुनीलजी जैन देवरी, 54. **सनावद** : पण्डित विकासजी शास्त्री मौ, 55. **खुरई (विधान)** : पण्डित विनोदजी शास्त्री बांसवाड़ा,

56.**सिलवानी** : पण्डित मनोजजी शास्त्री अभाना, 57. **पचमढी** : पण्डित विनितजी जैन आगरा, 58. **शाहगढ** : पण्डित संजयकुमारजी इन्जि. खनियांधाना, 59. **मन्दसौर (नरसिंहपुरा)** : पण्डित पंकजजी जैन खडैरी, 60. **पटेरा** : पण्डित भानुकुमारजी शास्त्री खडैरी, 61. **गुना (महावीर जिनालय)** : पण्डित अनिलजी शास्त्री गुना, 62. **शुजालपुर मण्डी** : चेतनप्रकाशजी बक्स्वाहा, 63. **चिचोली** : पण्डित रूपेशजी जैन मुंबई, 64. **शाहपुर** : पण्डित विनोदजी मोदी दलपतपुर, 65. **होशंगाबाद** : पण्डित अभिषेकजी मंगलायतन, 66. **सोनागिरी** : पण्डित लालजीराम जैन विदिशा, 67. **बावडीखेडा** : पण्डित आशीषजी अमायन, 68. **बंडा बेलई** : पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 69-70. **जावरा** : पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं दीपेशजी जैन ग्वालियर, 71. **कुचडौद** : पण्डित कैलाशचन्दजी जैन बुढेरा, 72. **गुना (कैन्ट)** : पण्डित विजयकुमारजी अशोकनगर, 73.**जावर** : पण्डित विपीनजी जैन, इन्दौर (सी.ए.), 74. **खरगौन** : पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री मौ, 75. **गढ़ाकोटा** : पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी सागर, 76. **ऊन पावागिरि** : श्रीमती आशाजी जैन मलकापुर, 77. **मगरौन** : पण्डित शीतलजी शास्त्री नौगाँव, 78. **नरवर** : पण्डित राजकुमारजी जैन अशोकनगर, 79. **करेरा** : पण्डित सन्तोषकुमारजी वैद खनियांधाना, 80. **बड़ामलहरा** : पण्डित रविकुमारजी ललितपुर, 81. **गोरमी** : पण्डित अनिलकुमारजी अमायन, 82. **अमायन** : पण्डित अजीतकुमारजी मड़ावरा, 83. **रहली** : पण्डित अमोलजी शास्त्री बांसवाड़ा, 84. **करैया (ग्वालियर)** : पण्डित निशांतजी

(इष्टोपदेश प्रवचन, पृष्ठ : 18 का शेष...)

जिसप्रकार मिट्टी का बर्तन अग्नि में तपकर-पककर बाहर आ गया हो तो अब पुन: उसे अग्नि में पकाने से कुछ लाभ नहीं है; उसीप्रकार अतीन्द्रिय आनन्द में मस्त हुए ज्ञानी को अन्य संकल्प-विकल्पों से कुछ लाभ नहीं है।

संसार के विषयों में मस्त जीव स्त्री-पुत्रादि में ऐसा लीन होता है कि उनके समक्ष स्वयं के दु:ख भी भूल जाता है। स्त्री-पुत्रादि को कोई दु:ख हो तो उनकी चिंता करता है और स्वयं के बारे में पूछा जाये तो कहता है कि मुझे तो कुछ हुआ ही नहीं। वह सदैव संयोगों में ही लीन रहता है। पर की प्रीति में इतना मस्त होता है कि स्वयं का बड़े से बड़ा दु:ख भी भूल जाता है।

हे भाई ! जिसे संसार की लगन है, उसे संसार के विषयभोग सुखकारी और आत्मा दु:खकारी लगता है; किन्तु एकबार यथार्थ सुख की लगन लग जाए तो आत्मा हितकारी और संसार अहितकारी भासित होता है। ●

शास्त्री बांसवाड़ा, 85.**जबेरा :** पण्डित अशोकजी सिरसागंज, 86.**केसली** : पण्डित कैलाशचन्दजी ग्वालियर, 87.**खडैरी** : पण्डित संजयजी साव खनियांधाना, 88. **शिवपुरी** : पण्डित ज्ञानचन्दजी टीकमगढ, 89. **दलपतपुर** : पण्डित कैलाशचन्दजी इन्दौर, 90. **लुकवासा** : पण्डित सुकुमालजी शास्त्री, 91. **आरोन (विधान)** : पण्डित कपिलजी शास्त्री पिडावा, 92.**लुहारदा** : पण्डित छगनलालजी जैन, 93.**महिदपुर** : पण्डित अरूणजी जैन टीकमगढ़, 94. **सागर (तारण-तरण)** : पण्डित अमितजी शास्त्री गुना, 95. **हरदा** : श्रीमती कुसुमलताजी जैन, 96.**अशोकनगर :** कु. परिणति पाटील जयपुर, 97.**अमलाई :** पण्डित सजलजी शास्त्री।

महाराष्ट्र प्रान्तह्न 1. **मुम्बई (मलाड)** : पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, 2. **मुम्बई (घाटकोपर)** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, 3. **मुम्बई (बोरिवली)** : पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, 4. **मुम्बई (सीमन्धर)** : पण्डित विपीनजी शास्त्री श्योपुर, 5. **मुम्बई (अन्धेरी-ईस्ट)** : श्रीमती अल्पनाजी भारिल्ल मुम्बई, 6. **मुम्बई (दहिसर)** : पण्डित सौरभजी शास्त्री मुंबई, 7.**मुम्बई (डोम्बिवली)** : पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा, 8. **मुम्बई (भायन्दर-वेस्ट)** : पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, 9.**मुम्बई (कान्दीवली-ईस्ट)** : श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, 10. **मुम्बई (मीरा रोड)** : पण्डित अजीतकुमारजी जैन फिरोजाबाद, 11. **मुम्बई (एवरशाईन)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री आगरा, 12. **मुम्बई (भांडुप)** : पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, 13. **मुम्बई** : पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, 14. **मुम्बई** : पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा, 15. **सोलापुर (बुवने मन्दिर)** : पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथ, 16.**औरंगाबाद (सिडको) :** पण्डित शीतलजी शेट्टी शिरोल, 17. **मलकापुर** : पण्डित सुनीलजी धवल, भोपाल, 18. **नागपुर (नेहरु पुतला)** : विदुषी राजकुमारीजी जैन जयपुर, 19. **देवलाली** : पण्डित सुरेशजी जैन टीकमगढ, 20. **गजपंथ सिद्धक्षेत्र** : पण्डित राजूभाईजी जैन कानपुर, 21. **हिंगोली** : पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, 22. **पुणे (जैन बोर्डिंग)** : पण्डित प्रकाशदादाजी झांझरी उज्जैन, 23. **अक्कलकोट** : पण्डित केशवरावजी जैन नागपुर, 24. **जलगाँव** : पण्डित नयनजी शाह सिकन्दराबाद, 25. **पंढरपुर** : पण्डित सचिनजी जैन खनियांधाना, 26. **सेलू** : पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, 27. **चिखली** : पण्डित शैलेन्द्रजी जैन मूंगेर, 28. **नातेपुते** : पण्डित जीवराजजी जैन नासिक, 29. **कारंजा (लाड)** : पण्डित कस्तुरचन्दजी जैन भोपाल, 30. **वाशिम (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, 31. **विहिगाँव** : पण्डित आतिशजी जोगी औरंगाबाद, 32. **डोणगाँव** : पण्डित चंदनमलजी शाह नातेपुते, 33. **औरंगाबाद (स्वा. भ.)** : श्रीमती लताजी रोम अकोला, 34.**शिवापुर** : पण्डित राजूजी काले रिठद, 35. **उस्मानाबाद** : पण्डित विजयकुमारजी बोरालकर वाघजाली, 36. **अकोला** : पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, 37-38. **नागपुर (विधान)** : पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर एवं पण्डित मनीषजी 'सिद्धान्त'

खडैरी, 39.**जामनेर** : पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 40. **सोलापुर (कासार मन्दिर)** : पण्डित नंदकिशोरजी मांगूलकर काटोल, 41. **डासाला** : पण्डित चिंतामणजी भुस औरंगाबाद, 42. **सांगवी (पुणे) :** पण्डित रवीन्द्रजी मसलकर अम्बड, 43. **हिवरखेड** : पण्डित श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 44. **अकलूज** : पण्डित कमलेशजी मौ, 45. **पुणे (चिंचवड)** : पण्डित सचीनजी शास्त्री गढी, 46.**मालेगाँव** : पण्डित रविन्द्रजी महाजन वसमत, 47. **सदाशिवनगर** : पण्डित अजयजी गोरे फालेगाँव, 48. **बेलोरा** : पण्डित सुनयजी माद्रप जालना, 49. **धामणगाँव बढे** : पण्डित विनयजी शास्त्री बून्दी, 50.**वरूड़ (बु.)** : पण्डित अक्षयजी वाडकर सांगली, 51. **शिवपुर** : पण्डित अभिजीतजी अलगौंडर शेडबाल, 52. **हेरले** : पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, 53. **साडवली** : पण्डित दीपकजी जैन बांसवाड़ा, 54. **कोल्हापुर** : पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले,55. **वसगडे** : पण्डित महेशजी नेजे दत्तवाड, 56. **तलदगे** : पण्डित श्रेणिकजी जैन बांसवाड़ा, 57. **ऐतवडे** : पण्डित सुकुमारजी जैन बांसवाड़ा, 58 **अष्टा** : पण्डित अमोलजी जैन बांसवाड़ा, 59. **मजले** : पण्डित सतीशजी जैन बांसवाड़ा, 60. **वालवा** : पण्डित उमेशजी घोसरवाडे अकिवाट, 61. **बागणी** : पण्डित मिलींदजी केटकाले कबनूर, 62. **मिणचे** : पण्डित सूरजजी पाचोरे नान्द्रे, 63. **घोसरवाड** :पण्डित रवीन्द्रजी आलमान हेरले, 64. **गणेशवाडी** : पण्डित संयमजी शेटे कोल्हापुर, 65. **बुर्ली :** पण्डित बालासाहेबजी चौगुले वलीवडी, 66. **इचलकरंजी** : पण्डित दिग्विजयजी आलमान हेरले, 67. **बोर्डी** : पण्डित अनिलजी आलमान हेरले, 68. **धामणी** : पण्डित भरतजी अलगौंडर बाहुबली, 69. **नांदणी** : पण्डित सनतजी खोत बांसवाड़ा, 70. **मोडनिंब** : पण्डित दीपकजी मजलेकर आलते।

राजस्थान प्रान्तह्न 1.**कोटा (रामपुरा)** : डॉ. श्रेयांसजी सिंघई जयपुर, 2. **कोटा (इन्द्रा विहार)** : पण्डित धनसिंहजी जैन पिड़ावा, 3.**बांसवाड़ा** : पण्डित राजकुमारजी जैन बांसवाडा, 4.**अलवर**:पण्डित मनोजजीजैन करेली,5.**उदयपुर(के.न.)** : पण्डित क्रान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर, 6.**उदयपुर (मुमुक्षु म.)** : पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, 7. **उदयपुर (मण्डी की नाल)** : पण्डित कैलाशचन्दजी जैन मोमासर, 8. **उदयपुर (सेक्टर 5)** :पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, 9.**उदयपुर (से.3)** :डॉ.महावीरप्रसादजी जैन टोकर, 10.**उदयपुर (गायरीयावास)** : पण्डित रीतेशजी जैन डडूका 11. **भीण्डर** :पण्डित सन्मतिजी मोदी सागर, 12.**उदयपुर (से.11)** :पण्डित पीयूषजी शास्त्री 13. **बिजौलियाँ** : पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, 14. **पिड़ावा** : पण्डित नन्हेलालजी जैन सागर, 15. **प्रतापगढ़ (भाईजी का मन्दिर)** : पण्डित अमितजी शास्त्री बांसवाडा, 16. **बारां** : पण्डित वीरेन्द्रजी जैन विराटनगर, 17. **देवली** : पण्डित शिखरचन्दजी शास्त्री निवाई, 18. **किशनगढ़** : पण्डित प्रवीणजी शास्त्री

जयपुर, 19.**वल्लभनगर** : पण्डित पद्मकुमारजी जैन कोटा, 20. **भीलवाड़ा** : डॉ. नेमचन्दजी जैन महावीरजी, 21.**चित्तौड़गढ़** : पण्डित विजयजी बडोदिया, 22. **बेंगू** : पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा, 23. **बून्दी (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित मोहनलालजी राठोड कशवरायपाटन, 24. **कुरावड़** : पण्डित वीरेन्द्रवीरजी जैन फिरोजाबाद, 25. **सेमारी** : पण्डित मीठालालजी भगनोत उदयपुर, 26. **जयथल** : पण्डित मथुरालालजी इन्दौर, 27. **उदयपुर (गायरियावास-विधान)** : पण्डित रोहितजी शास्त्री बांसवाड़ा, 28. **लूणदा** : पण्डित धर्मचन्दजी जैन जयथल, 29. **सरदारशहर** : पण्डित संजीवजी शास्त्री खडैरी, 30.**थानागाजी (अलवर)** : पण्डित विनोदजी शास्त्री बांसवाड़ा, 31. **कुशलगढ़ (तेरापंथी)** : पण्डित संजयजी शास्त्री बडामलहरा, 32. **साकरोदा** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी चित्तौड़गढ़, 33. **प्रतापगढ (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, 34.**झालरापाटन** : पण्डित चन्दूलालजी कुशलगढ़।

उत्तरप्रदेश प्रान्तह्न 1. **रूड़की :** डॉ. मानमलजी कोटा, 2.**ललितपुर** : पण्डित रमेशचन्दजी'दाऊ' जयपुर, 3. **खतौली** : पण्डित मधुकरजी जैन जलगांव, 4. **मैनपुरी** : पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 5. **गुरसराय** : पण्डित अभयकुमारजी बदरवास, 6. **अलीगढ़ (मंगलायतन)** : पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलीयाँ, 7. **मेरठ (तीरगरान)** : पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर, 8. **सहारनपुर** : पण्डित ज्ञानचंदजी जैन ललितपुर, 9. **रानीपुर (झांसी)** : पण्डित सुदीपजी बीना, 10. **करहल** : पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज ललितपुर, 11. **फिरोजाबाद (विधान)** : पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, 12. **कुरावली** : पण्डित सुमितजी शास्त्री टीकमगढ, 13. **डांडा-इटावा** : पण्डित महेशचन्दजी भोपाल, 14.**मड़ावरा** : पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, 15.**ललितपुर** : कु. स्वाती जैन जयपुर, 16.**अमरोहा** : पण्डित विमलकुमारजी जलेसर, 17. **बिजनौर** : पण्डित अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ, 18.**कांधला :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, 19. **गुढा** : पण्डित शिखरचन्दजी सिवनी, 20.**चिलकाना :** पण्डित अंकुरजी मंगलायतन, 21. **जैतपुरकलाँ :** पण्डित निर्मलजी एटा, 22. **गाजियाबाद :** पण्डित राजीवजी थानागाजी 23. **बडौत :** पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम, 24. **बानपुर :** पण्डित रमेशचन्दजी करहल, 25. **शिकोहाबाद :** ब्र. राकेशजी जैन बीना, 26. **कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री, पिड़ावा, 27. **कुरावली :** पण्डित सुमितजी शास्त्री टीकमगढ।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, 2.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 3. **अहमदाबाद(वस्त्रापुर) :** पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, 4.**अहमदाबाद (ओढव) :** डॉ. महेशजी जैन भोपाल, 5.**अहमदाबाद (मणिनगर) :** पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा, 6-7.**अहमदाबाद(ईशनपुर)**

: पण्डित नवीनजी शास्त्री एवं पण्डित करणजी शाह बडोदरा, 8.**अहमदाबाद(आशीषनगर) :** पण्डित सतीशचन्दजी जैन पिपरई, 9. **अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन पिपरई, 10.**हिम्मतनगर** : पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर,11.**राजकोट :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 12.**बडोदरा :**पण्डित सुरेशकुमारजी जैन गुना,13.**तलोद :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर,14.**दाहोद :** पण्डित चंदूभाईजी मेहताफतेपुर,15.**वापी :** पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी,16.**रखियाल :** पण्डित जगदिशसिंहजी पवांर उज्जैन, 17.**मोरबी :** पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, 18.**जेतपुर :** पण्डित मांगीलालजी कुरावली, 19.**अहमदाबाद (वस्त्रापुर-विधान) :** पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, 20.**पोरबन्दर :** पण्डित सौरभजी शास्त्री मौ।

अन्य प्रान्तह्न 1.**पोन्नूरधाम :** पण्डित रमेशचन्दजी जैन सोनगढ, 2. **दिल्ली (शाहदरा) :** पण्डित कस्तुरचन्दजी भोपाल (सिलवानीवाले), 3.**कोलकाता(खडगपुर) :** पण्डित कमलकुमारजी मलैया जबेरा, 4. **एर्नाकुलम्(कोचीन) :** पण्डित अनिलजी धवल कानपुर, 5.**बेलगाँव :** पण्डित अनन्तजी विश्वम्भर पुणे,6.**हुबली :** पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी, 7.**लुधियाना :** पण्डित निखिलजी शास्त्रीकोतमा, 8.**कोयम्बटूर :** पण्डित श्रेंयासजी शास्त्री जबलपुर, 9.**गन्नौरमण्डी :** पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर,10.**खेकड़ा :** पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड,11. **खेकड़ा (विधान) :**पण्डित सचिनजी मोदी खनियांधाना, 12.**हिसार :**पण्डित सुधीरजी जैन अलीगढ़,13.**घटप्रभा :** पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील मानकापुर,14.**सरिया :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शाहगढ,15.**बैंगलोर :** पण्डित राजकुमारजी जैन गुना,16.**बेलगाँव (विधान) :** पण्डित वीरेन्द्रजी जैन बांसवाड़ा, 17.**रामगढ कैन्ट :** पण्डित रतनचन्दजी चौधरी कोटा, 18.**चिक्कोडी :** पण्डित मिथुनजीपुदाली शिरगुप्पी, 19.**मानकापुर :** पण्डित संतोषजी समन्नवर धारवाड, 20.**तेरदाल :** पण्डित प्रशांतजी हिरेमठ शेडबाल,21.**शिमोगा :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्रीउगारबुद्रुक, 22.**उगार :** पण्डित भरतजी कोरी कागनरी, 23.**हजारीबाग :** पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर।

दिल्ली के लगभग विभिन्न 45 उपनगरों मेंह्न 1.पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद मैनपुरी, 2.पण्डित विक्रान्तजी शाह सोलापुर, 3.पण्डित अविरलजी शास्त्री विदिशा, 4.पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा, 5.पण्डित सुशीलजी शास्त्री फुटेराँ, 6.पण्डित सचिनजी शास्त्री बरेली, 7.पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, 8.पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, 9.पण्डित संदीपजी शास्त्री गोहद, 10.पण्डित सन्दीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, 11.पण्डित राकेशजी शास्त्री लोणी, 12.पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, 13.पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेराँ, 14.पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगाँवा, 15.पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा, 16.पण्डित आदित्यजी

शास्त्री खुरई, 17.पण्डित मनोजजी शास्त्री खडैरी, 18.पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, 19.पण्डित अंचलप्रकाशजी शास्त्री ललितपुर, 20.पण्डित पूरणचन्दजी जैन सोनागिरि, 21.पण्डित राजेन्द्रजी टीकमगढ, 22.पण्डित मनीषजी शास्त्री बरेली, 23.पण्डित शौर्यजी जैन मण्डाना, 24.पण्डित समकितजी जैन देवली, 25.पण्डित मंयकजी जैन गढी, 26.पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बरां, 27.पण्डित चैतन्यजी शास्त्री खडैरी, 28.पण्डित नितीनजी शास्त्री विदिशा, 29.पण्डित विमोशजी शास्त्री खडैरी, 30.पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा, 31.पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, 32.पण्डित कस्तुरचन्दजी शास्त्री खडैरी, 33.पण्डित नीरजजी शास्त्री खडैरी, 34.पण्डित आशीषजी शास्त्री मौ, 35.पण्डित अभयजी शास्त्री खडैरी, 36.पण्डित अशोकजी मांगूलकर राघौगढ, 37.पण्डित श्रेंयासजी शास्त्री अभाना, 38.पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री खडैरी, 39.पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा, 40.पण्डित पंकजजी शास्त्री बण्डा।

जयपुर के लगभग विभिन्न 20 उपनगरों मेंह्न 1. डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन, 2.पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 3.पण्डित संतोषजी झांझरी, 4.पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, 5.पण्डित विनयजी पापड़ीवाल, 6.डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 7.पण्डित चिरंजीलालजी जैन, 8.पण्डित रमेशचन्दजी जैन लवाण, 9.पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा,10.पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 11.पण्डित दिनेशजी शास्त्री बड़ामलहरा, 12. पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान खडैरी,13.पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा,14.पण्डित परेशजी शास्त्री घाटोल, 15.पण्डित प्रभातजी शास्त्री टीकमगढ़,16.पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री अकाझिरी,17.पण्डित अनन्तवीरजी जैन फिरोजाबाद, 18.पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन,19.विदुषी प्रेमलताजी जैन, 20.विदुषी प्रभाजी जैन, 21.पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, 22.पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 23. पण्डित अरहन्तवीरजी फिरोजाबाद, 24. पण्डित रोहनजी रोटे कोल्हापुर, 25. पं.प्रशान्तजी उखलकर, 26. पण्डित संदीपजी शास्त्री डडूका के प्रवचन-कक्षा का लाभ मिलेगा।

नोट ह्न शेष स्थानों पर निश्चित विद्वानों के नामों की सूची जैनपथ प्रदर्शक (सितम्बर-प्रथम) के अंक में प्रकाशित की जायेगी।

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में बुधवार, दिनांक 17 से शुक्रवार, दिनांक 26 अक्टूबर, 2007 तक आयोजित 10 वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर में सभी साधर्मी भाई-बहिनों को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमन्त्रण है।

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं

श्री दिगम्बर जिन चन्द्रप्रभ चैत्यालय, उदयपुर द्वारा आयोजित

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
युवा आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं
अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन

(रविवार, 23 दिसम्बर से सोमवार, 31 दिसम्बर, 2007 तक)

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं श्री दि. जिन चन्द्रप्रभ चैत्यालय उदयपुर के तत्त्वावधान में रविवार, दिनांक 23 से सोमवार, दिनांक 31 दिसम्बर 2007 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान, युवा आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन का आयोजन अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

इस अवसर पर अध्यात्मजगत के तार्किक विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन मंगलायतन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई आदि अनेक विद्वानों का मंगल सान्निध्य प्राप्त होगा।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, उदयपुर

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

08 से 15 सितम्बर, 07	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
16 से 26 सितम्बर, 07	मुम्बई	दशलक्षण महापर्व
17 से 26 अक्टूबर, 07	जयपुर	शिक्षण-शिविर
07 से 11 नवम्बर,07	देवलाली	महावीर निर्वाणोत्सव
21 से 26 नवम्बर, 07	अहमदाबाद (वस्त्रापुर)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
23 से 29 दिसम्बर, 07	उदयपुर	शिविर एवं अधिवेशन